Government Degree College,
Bagaha, West champaran

Subject - Political Science
(Honours)

Paper - 1st
Part - I
Important Topic

(Nature of politics)

(राजनीति की प्रकृति)

H.O.D
Assistant professor
AJAY KUMAR
Ajay Kumar

Scanned with CamScanner

राजनीति की प्रकृति
(NATURE OF POLITICS)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर ही वह अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास भी समाज में रहकर ही होता है। समाज में रहने वाले मनुष्य के जीवन के विविध पक्ष होते हैं जिनका अध्ययन विभिन्न सामाजिक विज्ञानों द्वारा किया जाता है। जिस प्रकार अर्थ-शास्त्र मानव के आर्थिक पक्ष का, समाजशास्त्र सामाजिक पक्ष का अध्ययन करता है, ठीक उसी प्रकार राजनीति मानव जीवन के राजनीतिक पक्ष का अध्ययन करता है।

राजनीति विज्ञान शब्द अँग्रेजी भाषा के दो शब्दों 'Political' राजनीतिक तथा 'Science' विज्ञान से मिलकर बना है जिसका अर्थ यूनानी भाषा में नगर अथवा राज्य होता है। दूसरे शब्द 'Science' विज्ञान का अर्थ - सुव्यवस्थित क्रमबद्ध अध्ययन करना। इस प्रकार राजनीति विज्ञान वह विज्ञान है जो नगर - राज्य से सम्बन्धित सुव्यवस्थित और क्रमबद्ध ज्ञान की जानकारी देता है।

Scanned with CamScanner

कालान्तर में इन नगर-राज्यों का स्थान राष्ट्रीय राज्यों ने ले लिया। इस प्रकार शब्द व्युत्पत्ति की दृष्टि से राजनीति विज्ञान राज्य का अध्ययन है। वर्तमान में राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत राज्य से संबंधित सभी विषयों का अध्ययन किया जाता है।

प्रारंभिक काल से ही यह जानने का प्रयास किया जा रहा है कि राजनीति का असल स्वरूप क्या है। लेकिन, अभी तक इस संबंध में किसी ठोस निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा जा सका है। चूँकि राजनीति की प्रकृति सदैव परिवर्तनशील रही है, इसकी सही सीमा और परिभाषा का अभी तक निर्धारण नहीं हो पाया है।

राजनीति की अस्पष्टता का दूसरा कारण इसका परिवर्तनशील स्वभाव है, जिसके कारण इसकी प्रकृति और परिभाषा हमेशा के लिए निर्धारित नहीं की जा सकती और इसीलिए राजनीति-शास्त्र के विद्वानों में इसके सही स्वरूप के संबंध में परस्पर विरोध बना हुआ है।

Scanned with CamScanner

राजनीति विज्ञान की परम्परागत परिभाषाएं

परिभाषा का उद्देश्य वस्तु की निश्चित रूप से व्याख्या करना तथा असीमित को सीमित करना होता है। जब हम किसी वस्तु को निश्चित करते हैं तो हम उसे सीमित भी कर देते हैं। किसी विषय का परिभाषा का देना एक कठिन कार्य है किन्तु यह आवश्यक भी है। अतः सर्वप्रथम हम राजनीति विज्ञान की परिभाषाओं का अध्ययन करेंगे।

भारतीय चिन्तकों के मतानुसार –

प्राचीन काल में भारतीय चिन्तकों ने भी 'राजनीति विज्ञान' का अध्ययन किया था। भारतीय चिन्तकों ने विद्याओं को निम्न चार वर्गों में विभाजित किया था – (i) आन्वीक्षकी, (ii) त्रयी, (iii) वार्ता और (iv) दण्डनीति। 'दण्डनीति' को ही वर्तमान में राजनीति विज्ञान के नाम से पुकारा जाता है। प्राचीन काल में 'दण्ड' शब्द का प्रयोग 'सजा' के अर्थ में नहीं किया जाता था।

Scanned with CamScanner

यह शब्द राज्य व्यवस्था से सम्बद्ध था। संक्षेप में कहा जा सकता है कि जिस विधा में राज्य सरकार और दण्ड का विवेचन किया जाता है, वही दण्ड नीति है।"

उपर्युक्त के अतिरिक्त भारत के प्राचीन साहित्य में 'राजनीति विज्ञान' को 'नीतिशास्त्र' मानने वाले प्राचीन चिन्तकों में शुक्र, कामन्दक, अन्नाम भट्ट, नीलकण्ठ के नाम उल्लेखनीय हैं। सुप्रसिद्ध प्राचीन विद्वान 'कौटिल्य' ने 'राजनीति विज्ञान' को 'अर्थशास्त्र' नाम दिया है। उनके ग्रन्थ का नाम ही 'अर्थशास्त्र' था। उन्होंने अपने ग्रंथ में राज्य, राजा, मंत्रिपरिषद्, राज्य का प्रशासन, कानून, न्याय व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, गुप्तचर एवं राजदूत व्यवस्था का विवेचन किया है। भारत के 'राजनीति विषयक विचारों' को जानने का 'अर्थशास्त्र' श्रेष्ठ साधन है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। स्पष्ट है कि प्राचीन भारत में राजनीति विज्ञान के अध्ययन का मुख्य विषय राज्य ही था।

Scanned with CamScanner

पाश्चात्य विचारकों के मतानुसार –

पाश्चात्य विद्वानों ने 'राजनीति विज्ञान' को अपने-अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया है।

16वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक चरण तक राजनीति विज्ञान की जो परिभाषाऐं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई उन्हे हम परम्परागत परिभाषाओं की श्रेणी में रखते है। उनके अध्ययन का मुख्य क्षेत्र राज्य व सरकार रहा है। इन विद्वानों की परिभाषाओं का अध्ययन तीन रूपों में किया जा सकता है।

(1) राज्य के अध्ययन के रूप में –

राजनीति विज्ञान के विभिन्न विद्वान 'राज्य' को ही राजनीति विज्ञान के अध्ययन की विषय-वस्तु मानते है। इन विद्वानों का मत है कि मनुष्य अपना राजनीतिक जीवन राज्य में ही व्यतीत करता है। अतः इन विद्वानों द्वारा राजनीति विज्ञान की परिभाषऐं राज्य के अध्ययन के रूप में प्रस्तुत की गयी है।

Scanned with CamScanner

ब्लैंटशली के मतानुसार – "राजनीति विज्ञान वह विज्ञान है जिसका सम्बन्ध राज्य से है और जो यह समझने का प्रयत्न करता है कि राज्य के आधारभूत तत्व क्या हैं, उसका आवश्यक स्वरूप क्या है, उनकी किन विविध रूपों में अभिव्यक्ति होती है तथा उसका विकास कैसे हुआ है।"

गार्नर के अनुसार – "राजनीति विज्ञान विषय के अध्ययन का प्रारंभ तथा अन्त राज्य के साथ होता है।"

जेम्स के शब्दों में – "राजनीति विज्ञान राज्य का विज्ञान है।"

(2) सरकार के अध्ययन के रूप में

राजनीति विज्ञान के कुछ विचारक राज्य के स्थान पर सरकार के अध्ययन को प्रमुख मानते हैं। इन विद्वानों का मत है कि राज्य की इच्छाओं को साकार रूप सरकार ही प्रदान करती है और राज्य की क्रियात्मक अभिव्यक्ति के लिए सरकार का होना अतिआवश्यक है।

Scanned with CamScanner

सीले के अनुसार – "राजनीति विज्ञान उसी प्रकार सरकार के तत्वों का अनुसंधान करता है जैसे – सम्पत्तिशास्त्र सम्पत्ति का, जीवशास्त्र जीव का, बीजगणित अंकों का, ज्यामितीय शास्त्र स्थान एवं लम्बाई-चौड़ाई का करता है।"

लीकॉक के अनुसार – राजनीति विज्ञान सरकार से संबंधित विद्या है।

(3) राज्य और सरकार दोनों के अध्ययन के रूप में

राजनीति विज्ञान के कुछ विद्वानों का मत है कि राज्य और सरकार दोनों का अध्ययन राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है क्योंकि सरकार के बिना राज्य एक अमूर्त कल्पना मात्र है तथा सरकार राज्य द्वारा प्रदत्त प्रमुख शक्ति का ही प्रयोग करती है। राज्य के अभाव में सरकार तथा सरकार के अभाव में राज्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ऐसी स्थिति में राज्य और सरकार दोनों ही राजनीति विज्ञान के अध्ययन के विषय बन जाते हैं।

Scanned with CamScanner

गिलक्राइस्ट के मतानुसार- "राजनीतिशास्त्र का सम्बन्ध राज्य तथा उसके साधन सरकार से है।"

पॉल जैनेट के अनुसार— "राजनीति विज्ञान समाज विज्ञानों का वह अंग है, जिसमें राज्य के आधार तथा सरकार के सिद्धान्तों पर विचार किया जाता है।"

~~गिलक्राइस्ट~~ आशीर्वादम् के अनुसार - "राजनीति विज्ञान राज्य और शासन दोनों का ही विज्ञान है।"

गिलक्राइस्ट के अनुसार - "राजनीति विज्ञान राज्य और सरकार की सामान्य समस्याओं का अध्ययन करता है।"

Scanned with CamScanner

मानवीय तत्व - राजनीति विज्ञान की उपर्युक्त सभी परंपरागत परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राजनीति विज्ञान की उपर्युक्त सभी परिभाषाएं अपूर्ण हैं। क्योंकि इनमें मानवीय तत्व की उपेक्षा की गयी है। राज्य और सरकार के अध्ययन में मानवीय तत्व सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। मानवीय तत्व के अध्ययन के बिना राजनीति विज्ञान का अध्ययन नितान्त औपचारिक, निर्जीव तथा संस्थागत ही माना जायेगा।

"राजनीति विज्ञान के सम्पूर्ण स्वरूप का निर्धारण उसकी मानव विषयक मौलिक मान्यताओं द्वारा ही होता है।"

लॉस्की का कथन है कि "राजनीति विज्ञान का संबंध संगठित राज्यों से सम्बन्धित मनुष्य के जीवन से है।"

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि राजनीति विज्ञान की परिभाषा करते समय मानव, राज्य तथा सरकार तीनों को ही उचित महत्व प्रदान किया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

अतः राजनीति विज्ञान की एक उचित परिभाषा देते हुए हम कह सकते हैं कि "राजनीति विज्ञान वह सामाजिक विज्ञान है जिसमें मानवीय जीवन के राजनीतिक पक्ष तथा इस पक्ष से संबंधित राज्य, सरकार तथा अन्य सम्बन्धित संगठनों का अध्ययन किया जाता है"

Scanned with CamScanner